सिन्ध पर अरब आक्रमण

प्रभाव / महत्व

आठवीं शताब्दी के प्रारंभ में अरबों ने सिन्ध को जीत कर पहली बार भारतीय भू-भाग पर अरब सत्ता स्थापित की। अरब भारत में उस प्रकार का साम्राज्य स्थापित नहीं कर पाये जैसा कि उन्होंने एशिया, अफ्रीका और यूरोप के विभिन्न भागों में किया था यहां तक कि सिन्ध पर भी उनका अधिकार अधिक दिनों तक नहीं रहा। इस अल्पकालीन सम्पर्क के बावजूद अरबों ने भारतीय जनजीवन को अत्यधिक प्रभावित किया एवं स्वयं भी प्रभावित हुये।

भारत के साथ अरबों के सम्पर्क का राजनीतिक क्षेत्र में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा कारण अरब प्रशासन के क्षेत्र में कोई खास प्रयोग नहीं कर पाये। थोड़े बहुत प्रयोग हुये भी तो नगर प्रशासन के क्षेत्र में क्योंकि एक तो अरब आकर नगर क्षेत्र में ही बसे दूसरे व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिये। लेकिन ग्रामीण प्रशासन पूर्ववत स्थानीय भूपतियों के नियंत्रण में बना रहा। इस दृष्टि से अरब सम्पर्क का राजनीतिक महत्व नगण्य रहा परंतु जब उसके दीर्घकालिक प्रभाव पर दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि अरबों ने नगण्य सा दिखने वाले प्रशासनिक प्रयोग के दौरान कुछ ऐसे प्रतिमान गढ़ गये जो आगामी तुर्क एवं अफगान शासकों के प्रशासनिक नीतियों के आधार बने। वस्तुतः ये प्रतिमान थे, सशक्त प्रशासनिक नियंत्रण के लिए ब्राह्मण-कुलीन वर्ग का समर्थन, जजिया का क्रियान्वयन, स्थानीय जन समुदायों की सुरक्षा, नगर केन्द्रों के आसपास के विस्तृत भू-भागों पर प्रशासकीय नियंत्रण

आदि।

भारत के आर्थिक जीवन को अरबों ने प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया। उन्होंने सिन्ध में कृषि, उत्पादन और व्यापार व वाणिज्य को प्रोत्साहन दिया। मरुभूमि क्षेत्र में कृषि का विकास करने और खजूर की खेती को बढ़ावा देने में अरबों का योगदान निर्णायक रहा है। ऊँट पालन में उन्होंने उन्नत तरीके प्रचलित किए जिससे अच्छी नस्ल के ऊँट स्थानीय तौर पर उपलब्ध होने लगे। अरबों के सम्पर्क के कारण चर्म शिल्प में भी प्रगति हुई जिससे नर्म और चिकने चमड़े का उत्पादन होने लगा और इससे बने चमड़े के सामान अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में बिकने लगे। इसके अलावे इस सम्बन्ध के फलस्वरूप व्यापार के कई आयाम खुले। अब अरब व्यापारियों की बस्तियाँ भारत के पूर्वी तट पर भी स्थापित हुई जिससे दक्षिण-पूर्वी एशिया के साथ उनका व्यापारिक सम्बन्ध बना। इन सब आर्थिक गतिविधियों से दोनों देशों को आर्थिक लाभ पहुँचा।

अरबों ने भारत में नगरीय जीवन को विकसित आधार दिया। चूँकि व्यापारिक गतिविधियों का संचालन नगर केन्द्रों से होता है अतएव अरबों ने नगर प्रशासन पर कुछ ज्यादा ध्यान दिया। व्यापारियों की सुविधा के लिये उन्होंने कारवाँ-सराय आदि का निर्माण कराया, मस्जिदें बनवायीं, व्यापार एवं वाणिज्य से सम्बद्ध यातायात की सुविधायें विकसित कीं। व्यापारिक गतिविधियाँ बढ़ीं। व्यापार बढ़ने से नगरीय सामाजिक संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन यह हुआ कि व्यापार पर से बौद्ध व्यापारियों का नियंत्रण समाप्त हो गया तथा अरब व्यापारियों का अधिकार स्थापित हो गया।

सामाजिक जीवन पर भी अरब सम्पर्क का प्रभाव पड़ा। अरब भारत में अकेले आये थे अतएव उन्होंने

स्थानीय महिलाओं के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये। इस वैवाहिक सम्बन्ध के कारण दो सामाजिक व्यवस्था करीब अतएव इनके बीच सामाजिक सम्मिलन प्रारंभ हुये। धर्म प्रचार एवं धर्म परिवर्तन से भारत में इस्लाम का प्रसार हुआ इसने भी नवीन सामाजिक संरचना का सृजन किया। धर्म प्रसार के कारण नगर केन्द्रों से बौद्ध मतावलम्बियों का वर्चस्व टूटा। कहा तो यहाँ तक जाता है कि सिन्ध से बौद्ध धर्म लगभग समाप्त ही हो गये। इस तरह हम देखते हैं कि अरब सम्पर्क के कारण सिन्ध के सामाजिक बुनावट में काफी परिवर्तन आये।

अरबों के शासन और सम्पर्क का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रभाव सांस्कृतिक जीवन पर पड़ा। अरबों के वैवाहिक सम्बन्ध एवं सामाजिक सम्मिलन का सबसे पहला प्रभाव भाषायी स्तर पर पड़ा। सिन्धी भाषा ने अरबी भाषा के प्रभाव को आत्मसात किया। सिन्धी भाषा लेखन में अरबी लिपि का प्रयोग होने लगा एवं इसके शब्दकोष में अरब मूल से विकसित अनेकों शब्द आ गये।

बौद्धिक स्तर पर हुई अन्तःक्रिया के बड़े अच्छे परिणाम निकले। यह अन्तःक्रिया निरंतर चलती रही तथा अब्बासी खलीफाओं के काल में चरमोत्कर्ष तक जा पहुँची। संस्कृत में लिखे ज्योतिष, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, दर्शनशास्त्र एवं साहित्य के ग्रंथों का अरबी भाषा में अनुवाद हुआ। इन अनुवादित पुस्तकों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण थी, ब्रह्मसिद्धान्त, खण्डखाद्य, सूर्यसिद्धांत, पंचसिद्धान्तिका, तथा पंचतंत्र की कथानियाँ। कई भारतीय विद्वानों को अब्बासी (शासकों) खलिफाओं की बगदाद स्थित राजदरबार में निमंत्रित किया गया विशेषकर अल मंसूर (753-74) एवं हारून-अल-रशीद (786-809) जैसे खलीफाओं के दरबार में। खलीफा अल-मामून ने बैत-उल-हिक्मा (विद्यापीठ) की स्थापना की जहाँ विभिन्न भाषाओं में लिखी

गई पुस्तकों का अरबी में अनुवाद किया जाता था। इस कार्य के लिये अनेक भारतीय विद्वानों को बुलाया गया।

अरबों द्वारा भारतीय चिकित्सा शास्त्र पर और भी अधिक ध्यान दिया गया था। भारत के कई चिकित्सा ग्रंथों का अरबी में अनुवाद हुआ जिसमें चरक एवं सुश्रुत की संहिताएं प्रमुख थीं। भारतीय चिकित्सकों को बगदाद में अत्यधिक आदर और सम्मान मिलता था जिससे बड़ी संख्या में चिकित्सक वहाँ आते थे। मनका एक ऐसे ही चिकित्सक थे जिन्होंने बीमार खलीफा यहन-अल-राशिद का इलाज करके यश और धन कमाया था।

भारतीय संगीत का अरबी संगीत पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा था। यद्यपि इसकी किसी पुस्तक का अनुवाद नहीं पाया गया है। जाहिज नामक अरबी लेखक ने अपनी पुस्तक में बगदाद में भारतीय संगीत को मिले सम्मान के विषय में लिखा है। अरब लेखक भारतीय संगीत को आनन्ददायक मानते थे तथा उनका मानना है कि अरबी संगीत के अनेक तकनीकी शब्द फारसी और भारत से लिये गये हैं। इसी प्रकार भारतीय संगीत में अनेक अरबी-अरबी लय/तान हैं जैसे- यमन और हिजज।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत के साथ अरब सम्पर्क के राजनीतिक परिणाम अधिक महत्वपूर्ण नहीं निकले, परंतु व्यापारिक गतिविधियों की वृद्धि और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया की शुरुआत जैसे उल्लेखनीय परिणाम सामने आये।